Date - 12-05-2020

Dr. Sanchlata

Asst. Professor (Guest faculty)

Dept. of Philosophy

Women's college, Samastipur

Email Id. - Snehababli1987@gmail.com

Cont. no - 8409587640

Class - B.A. - I (Hons.)

TOPIC - Jiva's Idea : Shankaracharya

Scanned with CamScanner

जीव-विचार

आत्मा या ब्रह्म का व्यावहारिक रूप जीव है। जब आत्मा शरीर, मन, बुद्धि इत्यादि उपाधियों से युक्त होता है तब वह जीव हो जाता है। शंकर जीव की परिभाषा देते हुए कहते हैं कि-

"जीवो बुद्ध्याद्युपाधि परिच्छिन्नाभिमानी"

अर्थात् जीव बुद्धि आदि की उपाधियों से परिच्छिन्न होने का अभिमानी है। आत्मा एक है परन्तु जीव अनेक हैं क्योंकि भिन्न-भिन्न शरीरों से यह अलग-अलग है।

जीव का स्वरूप

(i) जीव कर्ता, भोक्ता, ज्ञाता तथा संसारी है। सांसारिक कर्मों में भाग लेने के कारण वह कर्ता है। विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करने के कारण वह ज्ञाता है। सुख-दुःख में लिप्त होने के कारण वह भोक्ता है। राग-द्वेष कृत कल्पित संसार में निमग्न रहने के कारण वह संसारी कहलाता है।

(ii) जीव देहस्थ आत्मा है। उसके तीन शरीर होते हैं— स्थूल-शरीर, लिंग-शरीर और कारण-शरीर। जीव शरीर का चेतन अधिष्ठता है और प्राणों को धारण करने वाला है।

(iii) आत्मा के विपरीत जीव देश, काल एवं निमित्त के अधीन इस संसार में जन्म लेता है और मरता है। उसका बन्धन और मोक्ष होता है।

(iv) आत्मा और जीव का भेद पारमार्थिक नहीं है बल्कि अविद्या निर्मित है। अतः अविद्या के नष्ट होने पर वह आत्मा से अभिन्न हो जाता है।

साक्षी

जीव आत्मा का व्यावहारिक रूप है। जब आत्मा शरीर, इन्द्रिय, मन, बुद्धि रूपी उपाधियों से सीमित होती है तब उसकी संज्ञा 'जीव' होती है। जीव एक इकाई न होकर दो घटकों का समुच्चय है— अन्तःकरण और साक्षी। इनमें अन्तःकरण भौतिक है जो पाँच तत्वों से मिलकर बना है। यह अविद्या का परिणाम है।

जीव का दूसरा पक्ष साक्षी है। यह चेतन तत्व एवं निष्क्रिय द्रष्टा है। यह अन्तःकरण की वृत्तियों का तटस्थ द्रष्टा है। पर स्वयं प्रकाश्य है। यह अन्तःकरण से भिन्न होते हुए भी उसे प्रकाशित करने में मदद देता है।

Scanned with CamScanner

पुरुष परन्तु सांख्य के पुरुष के समान साक्षी अन्तःकरण से बिल्कुल पृथक व भिन्न नहीं है। साक्षी और अन्तःकरण सापेक्षिक है। अतः दोनों के संयोग में कठिनाई नहीं है। निष्क्रिय साक्षी और सक्रिय अन्तःकरण दोनों के योग को ही जीव कहते हैं। जब तक मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो जाती तब तक दोनों का संयोग किसी न किसी रूप में बना रहता है। मोक्ष के समय उनका संयोग भंग हो जाता है। संयोग के भंग होने पर साक्षी प्रकृति में और अन्तःकरण माया में विलीन हो जाता है।

साक्षी विषय है। अतः उसे ज्ञान का विषय नहीं बनाया जा सकता। इसी कारण अन्तःकरण विशिष्ट चैतन्य को ही जीव और अन्तःकरण से उपाहित चैतन्य को साक्षी कहा जाता है। (अन्तःकरण विशिष्टो जीवः, अन्तःकरणोपहितः साक्षी)। साक्षी निष्क्रिय द्रष्टा है। साक्षी और जीव समान नहीं है पर बिल्कुल भिन्न भी नहीं है।

Scanned with CamScanner